हमारा परमेश्वर पिता दिखने में कैसा है?

परमेश्वर का सार ही *pneuma* है जिसका अर्थ है ''आत्मा।'' यूनानी भाषा में ''आत्मा'' अलिंगी है, जिसका अर्थ यह है कि इस शब्द के गुण न तो नर हैं और न ही मादा। यीशु ने कहा था कि हमें ''*pneumati*'' अर्थात ''आत्मा से'' (बिना लिंग विचार के) से आराधना करनी चाहिए (यूहन्ना 4:24)। इससे हमें बपतिस्मा लेने वालों के बारे में पौलुस की एक महान पुष्टि का स्मरण आता है: ''अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतन्त्र; न कोई *नर, न नारी;* क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो'' (गलतियों 3:28)।

लिंग अर्थात नर और मादा के विचार को शामिल किए बिना बात करनी थोड़ी अजीब लग सकती है। परन्तु यूनानी सहित बहुत सी भाषाओं में ऐसा होता है।

फिर, हम परमेश्वर को पिता कैसे कहते हैं? इसका उत्तर दो तरह से दिया जा सकता है।

एक अनादि पिता

हम सीधे ही परमेश्वरत्व के भीतर के आंतरिक सम्बन्धों में चले जाते हैं। यहां पर हमें परमेश्वर के अनिवार्य स्वभाव में अपने प्रश्न का एक उत्तर मिलता है। वह एक त्रिएक परमेश्वर है, जिसका सार आत्मा है, जिसमें तीन व्यक्ति हैं। अनादि परमेश्वर ही अनन्त पिता, अनन्त पुत्र व अनन्त आत्मा है। इसलिए परमेश्वर को पहले पिता के रूप में वर्णित किया गया है, क्योंकि पिता के रूप में अपने ''इकलौते पुत्र'' (यूहन्ना 3:16) के साथ उसका सदा से सदा तक सम्बन्ध है। परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर आत्मा सदा से ही हैं। परमेश्वर पुत्र को रचा नहीं गया। परमेश्वर आत्मा परमेश्वर पिता की ओर से आता है और उसे परमेश्वर पुत्र द्वारा भेजा जाता है (यूहन्ना 15:26)।

इस सबका अर्थ यह है कि पूरे अनन्तकाल में ऐसा कोई अवसर नहीं आया जब ''कुछ बनाने'' चमत्कार करने के लिए परमेश्वर को किसी मादा ''साथी'' की ''आवश्यकता'' पड़ी हो। ऐसी ऊलजलूल धारणाओं का आधार मूर्तिपूजा तथा मिथिहास होता है।[1] पुराने नियम में कनानियों के संतान देने वाले नर तथा मादा देवताओं के विरोध में नियम था।[2]

फिर, परमेश्वर को पिता कैसे कहा जा सकता है? हम उसे पिता इसलिए कहते हैं

क्योंकि परमेश्वरत्व में आत्मिक स्वभाव के द्वारा वह अनादि पिता है/जैसे सार में वह आत्मा है, वैसे ही व्यक्ति में वह पिता है।

एक सृजनात्मक पिता

परमेश्वर के पिता होने के प्रश्न की खोज के लिए हमारी दूसरी दिशा परमेश्वरत्व के आंतरिक स्वभाव के बाहर चली जाती है। आगे बढ़ते हुए, हमें ध्यान में रखना चाहिए कि यद्यपि त्रिएकत्व में व्यक्तियों में भिन्नता दिखाई देती है, परन्तु जो कुछ उन्होंने किया है और जो वे कर रहे हैं उस सब से उनके कार्य में एकता स्पष्ट दिखाई देती है। हमारी इस बात को तीन उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। *सृष्टि* पहला उदाहरण है (उत्पत्ति 1:1, 2; यूहन्ना 1:1-3; इब्रानियों 1:1-3)। यह सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर अर्थात त्रिएकत्व का काम है। *प्रकाशन* दूसरा उदाहरण है (गलतियों 1:12; इफिसियों 3:2-6)। यह भी सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर अर्थात त्रिएकत्व का काम है। *प्रायश्चित* तीसरा उदाहरण है। इसमें भी पूर्ण परमेश्वर अर्थात त्रिएकत्व का काम है (इब्रानियों 9:14; 10:3-10)।

उदाहरण और भी दिए जा सकते थे, परन्तु यह दिखाने के लिए कि अपने सारे काम में परमेश्वर ''पूरी तरह'' लगा हुआ है, इतना ही काफी है। सृष्टि, प्रकाशन तथा प्रायश्चित में अकेला पिता परमेश्वर ही नहीं है। इन कामों में इन तीनों की अलग-अलग भूमिकाएं किसी भी प्रकार काम में उनकी एकता को व्यर्थ नहीं करतीं, बल्कि उसका दायरा बढ़ा देती हैं। उदाहरण के लिए, छुटकारे की समस्त योजना में, परमेश्वर पिता ने परमेश्वर पुत्र को संसार के पापों के लिए क्रूस पर मरने के लिए भेज दिया। परन्तु, परमेश्वर पिता क्रूस पर नहीं मरा, न ही उसने क्रूस का कष्ट सहा। परमेश्वर पिता ने हमारे लिए परमेश्वर पुत्र को मरने के लिए भेज दिया। पुत्र के गाड़े जाने व पुनरुत्थान के बाद, परमेश्वर पिता ने उसे अपने दाहिने हाथ बिठाकर सारा अधिकार व शक्ति दे दी (मत्ती 28:18; यूहन्ना 3:16; प्रेरितों 2:23-33)। परमेश्वरत्व के स्वभाव के ''भीतर'' परमेश्वर के कामों के ''बिना'' झांककर पिता के रूप में परमेश्वर के बारे में क्या निष्कर्ष निकलता है? वह किसी से शारीरिक सम्बन्ध बनाने या अपने पौरुष के कारण नहीं बल्कि अपने ईश्वरीय स्वभाव से अनादि पिता कहलाता है। सृष्टि का उसका कार्य केवल परमेश्वर पिता का ही नहीं, बल्कि पूर्ण रूप से परमेश्वर का है। फिर, स्वीकरण-योगदान-से हम पाते हैं कि वह मनुष्य जाति के मामलों तथा भविष्य में भी विलक्षण भूमिका निभाता है।

इसके प्रकाश में यह स्पष्ट है कि परमेश्वर के लिए ''पिता'' शब्द यह प्रमाण नहीं है कि पुराने समय के लोग उसके प्रति अधिक निष्ठा रखते थे।[3] जैसे हमने पहले ही कहा है, मूर्तिपूजक समाजों में आम तौर पर अपने देवताओं को नर तथा मादा के रूप में देखा जाता था। यदि सभी नहीं, तो उनकी अधिकतर पूजा पद्धति प्रजनन क्षमता के संस्कार ही होते थे। बहुत से देवता और उनकी पत्नियां जंगलियों की तरह उछलते-कूदते थे। कई बार इन रीतियों से इस्राएली लोग भी आकर्षित हुए, जैसा कि बार-बार पुराने नियम में दिखाया गया है। आखिर, उनका परमेश्वर तो अपने आस पास के लोगों में दिखाई देने वाले भिन्न-भिन्न

देवताओं की तुलना में अदृश्य और कठोर था।

इसलिए यह दावा करना गलत है कि अपने परमेश्वर को ''पिता'' कहकर इस्राएली किसी न किसी तरह समयों की गति को दिखाते थे। वह ही सच्चा और जीवता परमेश्वर है। ''हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है'' (व्यवस्थाविवरण 6:4)! इस्राएलियों के लिए कोई बहुदेववाद नहीं था, न ही कोई देवी मां थी। उन पर ये निषेध व्यवस्था से लगाए गए थे। अन्यजातियों के धार्मिक सम्मेलनों में नर तथा मादा देवताओं की मांग की जाती थी, परन्तु इस्राएल के प्रकट धर्म में नहीं। वास्तव में, सम्पूर्ण इब्रानी बाइबल में ''देवी'' के लिए कोई अलग इब्रानी शब्द तक नहीं है।[4] यह दावा कि ''पुरखाओं की उलझन'' के कारण परमेश्वर को ''माता'' के बजाय ''पिता'' कहलाना पड़ा, बाइबल अन्दर तथा बाहर दोनों प्रकार के प्रमाण की भरमार से दूर है। यह दावा पवित्र शास्त्र के परमेश्वर का सच्चा प्रकाशन होने की यथार्थता का भी इन्कार करता है। जब लोग इस आधार पर प्रभु की प्रार्थना समाप्त करने की वकालत करते हैं कि यह ''हमारे पिता'' को सम्बोधित है, तो यह हमारे समय की एक दुखद व्याख्या है, बाइबल के समय की नहीं।

एक विश्वव्यापी पिता

हम पहले ही अनन्त त्रिएकत्व में मनुष्यों के साथ सम्बन्ध के बारे में पिता के रूप में परमेश्वर की बात कर चुके हैं। अब परमेश्वर के पिता होने के रूप में विचार करते हुए, हम परमेश्वर के अपने लोगों को व्यापक ऐतिहासिक प्रकाशन अर्थात बाइबल पर ध्यान देते हैं। यहां हम देखते हैं कि परमेश्वर तीन अलग-अलग ढंग से पिता के रूप में प्रकट होता है। ये तीनों ही महत्वपूर्ण हैं अर्थात सबका अपना-अपना महत्व है ।

पहले ढंग में, हम देखते हैं कि *अपनी सृष्टि के द्वारा परमेश्वर विश्वव्यापी पिता है।* हम देख चुके हैं कि त्रिएकत्व के इन तीनों व्यक्तियों का योगदान सृष्टि की रचना में है, इसलिए अब स्वीकरण के द्वारा हमें स्मरण दिलाया जाता है कि सृष्टि में पिता की भूमिका पर ज़ोर दिया गया है। (इसी प्रकार से ये तीनों व्यक्ति छुटकारे के सम्पूर्ण कार्य में लगे हुए हैं, परन्तु छुटकारा दिलाने वाले की भूमिका के उसके अपने स्वीकरण में हम परमेश्वर पुत्र को छुटकारे का दाम चुकाते हुए देखते हैं।) सृष्टि से परमेश्वर का पिता वाला सम्बन्ध उसके रचनात्मक कार्य से बनता है। सृष्टि के सिरताज के रूप में मनुष्य जाति को देखा जाता है अर्थात उसे सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, क्योंकि मनुष्य जाति में ही परमेश्वर का स्वरूप तथा उसकी समानता डाली गई है (उत्पत्ति 1:26, 27)।

परमेश्वर के सृजनात्मक कार्य में दिखाई गई सामर्थ से अपनी सारी सृष्टि पर उसके प्रभुत्व का आश्वासन मिलता है। बाइबल के बहुत से पद सृजनहार अर्थात पिता और सामर्थ अर्थात प्रभु के इस मेल की झलक देते हैं। वे परमेश्वर के विश्वव्यापी पिता होने और उसकी सृष्टि में निकट सम्बन्ध होने का दावा करते हैं:

> जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया

करता है। क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है; और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही हैं।

यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है, और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है (भजन संहिता 103:13, 14, 19)।

अपनी सृष्टि पर शासन करते हुए मनुष्य के प्रति अपनी दयालुता में परमेश्वर पिता है। पौलुस ने अथेने में अरियुपगुस की सभा में मूर्तिपूजक दार्शनिकों को संबोधित करते हुए परमेश्वर को विश्वव्यापी पिता के रूप में दिखाया था। उसने उनके ही एक कवि को उद्धृत किया था जिसने परमेश्वर के लिए कहा था, ''हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं'' (देखिए प्रेरितों 17:24-29, विशेषकर 28)। यदि हम परमेश्वर की संतान हैं, तो वह हमारा पिता है। यह बात सब लोगों पर लागू होती है। इस प्रकार सृष्टि के द्वारा, परमेश्वर सबका विश्वव्यापी पिता है।

आदम की रेखा के बारे में पढ़ना दिलचस्प है। ''जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की तब अपने ही स्वरूप में उसको बनाया; उसने नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की और उन्हें आशीष दी, और उनकी सृष्टि के दिन उनका नाम आदम [अर्थात मनुष्य] रखा'' (उत्पत्ति 5:1ख, 2)। परन्तु नये नियम में, इस सृष्टि का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल की गई भाषा यीशु की (उलटी) वंशावली के अन्तिम वाक्य ''और वह आदम का, और वह परमेश्वर का (पुत्र)'' के रूप में मिलती है (लूका 3:38ख)। आदम (मनुष्य) की सृष्टि में परमेश्वर ''पिता की'' भूमिका में मिलता है। पहले आदम का पिता होने के कारण, वह सारी मनुष्यजाति का पिता है।

एक चयनात्मक पिता

अपनी प्रतिज्ञा/वाचा के द्वारा परमेश्वर चयनात्मक पिता भी है। मलाकी की पुस्तक का एक पद परमेश्वर को सृष्टि के द्वारा परमेश्वर के रूप में, विश्वव्यापी पिता के रूप में प्रतिज्ञा/वाचा के द्वारा चयनात्मक पिता के रूप में बदलने को दिखाता है। परमेश्वर ने कहा था कि उसके लोगों के साथ उसकी वाचा ''जीवन और शांति की'' वाचा थी। उसने यह भी कहा था, ''तुम लोग धर्म के मार्ग से ही हट गए; ... तुम मेरे मार्गों पर नहीं चलते।'' फिर मलाकी ने एक सर्वमान्य सत्य के आधार पर यहूदियों से एक आग्रह किया था। ''क्या हम सभों का एक ही पिता नहीं? क्या एक ही परमेश्वर ने हमको उत्पन्न नहीं किया? हम क्यों एक दूसरे का विश्वासघात करके अपने पूर्वजों की वाचा को तोड़ देते हैं?''[5] (मलाकी 2:3-10)। मलाकी लोगों के साथ दो शानदार सिद्धांतों के आधार पर तर्क कर रहा था: परमेश्वर पिता है क्योंकि वह सृजनहार है; परमेश्वर इस्राएल का पिता है क्योंकि उनके साथ उसने वाचा बांधी है।

प्रतिज्ञा/वाचा में चयनात्मक पिता के रूप में परमेश्वर पुराने नियम का मुख्य विषय है।

हमें इसमें एक महत्वपूर्ण बदलाव दिखाई देना चाहिए। सृष्टि की रचना के द्वारा विश्वव्यापी पिता के रूप में पाप के कारण परमेश्वर से जुदाई होने तक मनुष्य के लिए अपने साथ पूरी संगति के लिए पर्याप्त आधार था। पाप न करने तक, आदम, जैसा कि हम देख चुके हैं ''परमेश्वर का पुत्र'' था। जब मनुष्य ने पाप किया, तो वह परमेश्वर से दूर हो गया था। तब से लेकर, पूरे इतिहास में, सृष्टि के द्वारा विश्वव्यापी पिता के रूप में परमेश्वर से पूरी संगति के लिए परमेश्वर पर्याप्त आधार नहीं है।

परमेश्वर की पहल पर, इब्राहीम को उसकी सेवा के लिए बुलाया गया और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं (उत्पत्ति 12:1-3) और वाचा (उत्पत्ति 17:1, 2) के द्वारा उत्साहित किया गया था। उसके पुत्र इसहाक और उसके पौत्र याकूब (इस्राएल) के साथ भी यही प्रतिज्ञाएं दोहराई गई थीं (उत्पत्ति 26:2-5; 35:9-12)। क्या परमेश्वर के ये काम परमेश्वर *पिता* के काम थे? हां, इसमें कोई संदेह नहीं है। अपने लोगों को व्यवस्था देने से भी पहले, सीनै पर्वत से ही, परमेश्वर ने इस्राएल को अपना पहलौठा पुत्र माना था (निर्गमन 4:22)। परमेश्वर द्वारा बुलाए गए लोग यह जानते थे कि वाचा के प्रति उनकी विश्वास्योग्यता के आधार पर उन्हें दूसरे सभी लोगों में से *चुना* गया था (निर्गमन 19:3-6)।

समय बीतने पर, लोग कनान में प्रवेश कर गए थे। न्यायी उनके अगुवे थे। अन्ततः, राजाओं का प्रबन्ध ठहराया गया। दाऊद और सुलैमान के शासन की शान, ठाठबाट और शक्ति के बीच, परमेश्वर ने उन्हें स्मरण दिलाया कि वह उनका पिता था। परमेश्वर ने दाऊद को उसके पुत्र सुलैमान के विषय में कहा, ''... मैं उसका पिता ठहरूंगा, और वह मेरा पुत्र ठहरेगा। ...'' (2 शमूएल 7:12-14; देखिए 1 इतिहास 28:4-7)। भजन लिखने वाले ने दाऊद से सम्बन्धित राज्य, वाचा और दाऊद के परमेश्वर को पिता के रूप में मानने के इन वैभवशाली समयों के सम्बन्ध में परमेश्वर की स्तुति गाई। उसने लिखा कि परमेश्वर ने दाऊद के साथ अपने सम्बन्ध के बारे में क्या कहा था: ''वह मुझे पुकार कर कहेगा, कि तू मेरा पिता है, मेरा ईश्वर और मेरे बचने की चट्टान है। फिर मैं उसको अपना पहलौठा ... ठहराऊंगा ...'' (भजन 89:24-29)।

बहुत से भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर के साथ उसके चुने हुए लोगों के सम्बन्ध को पिता/संतान का सम्बन्ध बताया था। आम तौर पर यह डांट लगाने के लिए भी होता था जब लोग परमेश्वर अर्थात अपने पिता के प्रति वफ़ादार नहीं होते थे। एक बार, जब वे शिकायत कर रहे थे और फारसी राजा कुप्रुस का इस्तेमाल करके उन्हें निकाल लाने के परमेश्वर के ढंग पर संदेह कर रहे थे, तो यशायाह के द्वारा उसका तीव्र उत्तर था, ''हाय उस पर जो अपने पिता से कहे, तू क्या जन्माता है? और मां से कहे, तू किसकी माता है?'' (यशायाह 45:9-11)। (दिलचस्प बात यह है कि ऐसे ही एक कारण के लिए रोमियों 7:14-24 में पौलुस ने इस पद का इस्तेमाल किया था।)

पद दिखाते हैं कि चयनात्मक पिता के रूप में अपने लोगों से परमेश्वर के सम्बन्ध में उसका उन पर प्रभु होना और उनका उसके सेवक होना शामिल है। उसके लोगों द्वारा मूर्तिपूजक होते देखना परमेश्वर को अच्छा नहीं लगता था। ''तू मेरा पिता है,'' और पत्थर

से, ''तू ने मुझे जन्माया है'' कहना शर्म की बात थी (यिर्मयाह 2:26-28)। उसकी इच्छा के प्रति उनके विद्रोह और अविश्वास को पिता के रूप में सेनाओं के प्रभु का अनादर माना गया जिसमें प्रभु के रूप में उसका कोई भय नहीं माना जाता (मलाकी 1:6)।

कुल मिलाकर, भविष्यवक्ता यह प्रचार करते रहे कि केवल परमेश्वर ही उनके पूर्वजों, इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर था। वह अपने चुने हुए लोगों का पिता है, केवल वह ही एकमात्र जीवित परमेश्वर है जिस पर वे निर्भर हो सकते हैं: ''निश्चय तू हमारा पिता है, यद्यपि इब्राहीम हमें नहीं पहचानता और इस्राएल हमें ग्रहण नहीं करता; तौभी, हे यहोवा, तू हमारा पिता और हमारा छुड़ाने वाला है; प्रचीनकाल से यही तेरा नाम है'' (यशायाह 63:16)। उन्होंने यह भी माना, ''तौभी, हे यहोवा, तू हमारा पिता है; देख, हम तो मिट्टी हैं, और तू हमारा कुम्हार है; हम सब के सब तेरे हाथ के काम हैं'' (यशायाह 64:8)।

अकाल, मरी, दण्ड, विद्रोह, दासता, मूर्तिपूजा, युद्ध आदि के बावजूद, जो इस्राएल के इतिहास की स्मरणीय घटना थी, परमेश्वर ने, जो कि चुनने वाला पिता है हमेशा अपने आपको उनके पिता के रूप में माना (यिर्मयाह 31:9घ)। वह अपनी प्रतिज्ञा/वाचा पर स्थिर रहा और अपने प्रिय बच्चों को क्षमा करता रहा। पुराने नियम के हृदय विदारक पदों में से एक अपने भटके हुए बच्चों के लिए बदले में परमेश्वर का प्रेम देने का वर्णन करता है:

> जब इस्राएल बालक था, तब मैं ने उस से प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया। परन्तु जितना वे उनको बुलाते थे, उतना ही वे भागे जाते थे; वे बाल देवताओं के लिए बलिदान करते, और खुदी हुई मूरतों के लिए धूप जलाते गए। मैं ही एप्रैम को पांव-पांव चलाता था, और उनको गोद में लिए फिरता था; परन्तु वे न जानते थे कि उनका चंगा करने वाला मैं हूं। मैं उनको मनुष्य जानकर प्रेम की डोरी से खींचता था, और जैसा कोई बैल के गले की जोत खोलकर उसके साम्हने आहार रख दे, वैसा ही मैंने उन से किया (होशे 11:1-4)।

पाद टिप्पणियां

[1]विल ड्यूरेन्ट, *अवर ओरियन्टल हैरिटेज* (न्यूयॉर्क: साइमन एण्ड शुस्तर, 1954), 60 से; एडिथ हेमिल्टन, *माइथोलॉजी* (न्यूयॉर्क: न्यू अमेरिकन लाइब्रेरी ऑफ़ वर्ल्ड लिटरेचर [मैन्टर बुक], 1959), 24-28. [2]निर्गमन 20:1-6; व्यवस्थाविवरण 23:17; न्यायियों 10:6-10; 1 राजा 11:4, 5, 33; 2 राजा 21:3; 23:13. अश्तोरेत को प्राय: बआल की देवियां माना जाता था। [3]भाव यह कि, पूर्वनिर्धारित विश्वास में कि नर मादाओं से उत्तम थे, ''पिता'' के रूप में परमेश्वर के हवाले का कोई आधार नहीं है। [4]हिन्दी के अनुवाद में 1 राजा 11:5, 33 में ''देवी'' शब्द है, परन्तु यह तो संदर्भ से ही पता चलता है क्योंकि अश्तोरेत सीदोनियों की देवी [मादा ईश्वर] थी। यहां पर इब्रानी शब्द केवल इलोह (*elohe*) है जिसका अर्थ इब्रानियों के परमेश्वर की तरह *अश्तोरेत* की पहचान करवाते हुए ''के देवता'' है, उदाहरण के लिए (उत्पत्ति 26:24)। [5]और टिप्पणियों के लिए, *द इन्टरप्रेटर'स बाइबल,* vol. 6, सं. जॉर्ज ऑर्थर बटरिक (नेशविल्ले: अबिंग्डन, 1956), 1134 में देखें रॉबर्ट सी. डैन्टन, ''मलाकी।''